# झारखंड स्थित धनवाद जिले में महाविद्यालय स्तर पर छात्रों में अध्ययन के प्रति बढ़ता असंतोष

शोधकर्ता
प्रभा कुमारी
कुमार वी.एड. कॉलेज झारखण्ड

यह मानव की स्वाभाविक प्रकृति है, कि जब कभी भी उसकी इच्छाओं, आवश्यकताओं, परम्परागत मूल्यों अथवा कुशलताओं को दूसरे व्यक्तियों के द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं होती है, तब उसके अशांत मन में एक प्रकार का असंतोष, निराशा और कभी–कभी तनाव उत्पन्न हाने लगते है। ये तनाव कभी –सामान्य होते है, तो कभी कुछ विशेष परिस्थितियों में अत्यधिक उग्र रूप धारण कर लेते है। कोई व्यक्ति या कोई भी वर्ग ऐसा नहीं होता है, जिसमें कम या अधिक मात्रा में ऐसे तनाव कभी उत्पन्न न होते हों। हमारे देश में छात्र असन्तोष एक स्वयं सिद्ध बात हैं। प्रायः आज की स्थिति में विद्यार्थी इसका दोष शिक्षा वातावरण और उत्तेजक घटनाओं पर डालता है, शिक्षाविद् शिक्षा और बाहरी हस्ताक्षेप पर इसका उत्तरदायित्व डालकर अपना भार हल्का कर लेते है और अभिभावक और नेता जब जो मन में आता है, कह बैठते है– कभी शिक्षा प्रणाली को दोष देते हैं, तो कभी शिक्षकों की अयोग्यता को कोसने लगते है, कभी सरकार की नीति को दोषपूर्ण कहकर अपना मन समझा लेते हैं। बच्चों के मन में निराशा और तनाव उत्पन्न होते है, लेकिन अपनी असमर्थता के कारण वे उसे व्यक्त नहीं कर पाते। इसके पूर्णतया विपरीत छात्र वर्ग न तो स्वयं को असमर्थ समझता है और न ही उसके पास जीवन के अधिक अनुभव होते है, दूसरी ओर स्वयं में एक स्फूर्ति उत्साह तथा शक्ति का अनुभव करते है। इसके फलस्वरूप वह परिस्थितियों तथा समस्याओं के समाधान के लिए कोई समझौता नहीं करना चाहता, बल्कि आन्दोलन, हड़ताल प्रदर्शन के द्वारा अपने असन्तोष को व्यक्त करने लगता है। इस प्रकार छात्र वर्ग द्वारा सार्वजनिक रूप से अपने असंतोष को व्यक्त करना ही छात्र असंतोष है।

वर्तमान स्थितियों में छात्र असंतोष की विभिन्न अभिव्यक्तियां है। छात्रों द्वारा सदैव हड़ताल, प्रदर्शन व घेराव किये जाते है। जो अशोभनीय दृष्टिगोचर हुये हैं। इसके अतिरिक्त अनुशासन प्रिय शिक्षकों का अपमान करना, परीक्षा में नकल करने के लिए तरह–तरह के

उपद्रव करना, आवश्यकता पड़ने पर हिंसा पर उतर आना शिक्षा संस्थाओं की सम्पत्ति को तोड़ना या उसमें आग लगाना आदि अनेक प्रकार से छात्र अपना असंतोष प्रकट करते है।

अध्ययन का उद्देश्य निम्न हैं –

- महाविद्यालय के छात्रों में किन पहलुओं को लेकर असंतोष हैं।
- महाविद्यालय के छात्रों में छात्र असंतोष के कारणों को उजागर करना।
- महाविद्यालय के छात्रों के विचारों को जानने का प्रयास है।
- महाविद्यालय के छात्रों की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक राजनैतिक समस्या का निदान करना।
- छात्र असंतोष को सबके सामने सार्वजनिक रूप से सुझावों सहित व्यक्त करना।

प्रस्तुत अध्ययन में धनवाद जिले कें महाविद्यालय प्रसिद्ध दो महाविद्यालय प्रथम जी.एन.शिक्षा महाविद्यालय धनवाद तथा सिंडरी शिक्षा महाविद्यालय धनवाद जिले के प्रत्येक शिक्षा महाविद्यालय से 100 विधार्थियो का चयन किया गया हैं।

**परिणाम**

**आयामः1: प्रवेश संबंधी**

प्र. क्रं. 1 ''महाविद्यालय में प्रवेश का अधार 'मेरिट' होना चाहिए। 29 प्रतिशत विद्यार्थियों को 'मेरिट' के आधार पर प्रवेश उचित लगता हैं तथा 71 प्रतिशत छात्रों को यह आधार उचित नहीं लगता है।

प्र. क्रं. 2 ''महाविद्यालय में प्रवेश का अधार 'प्रवेश परीक्षा' होना चाहिए। 71 प्रतिशत विद्यार्थियों को 'प्रवेश परीक्षा' के आधार पर महाविद्यालय में प्रवेश चाहते हैं, जबकि 29 प्रतिशत छात्र महाविद्यालय में प्रवेश परीक्षा के आधार पर प्रवेश नहीं चाहते है।

प्र. क्रं. 3 ''महाविद्यालय में विद्यार्थी वांछित आधारों के बिना भी प्रवेश ले लेते है।

प्रवेश के वांछित आधारों के बिना भी 77 प्रतिशत छात्र प्रवेश प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं, जबकि 23 प्रतिशत छात्र वांछित आधारों पर ही छात्र प्रवेश प्राप्त करते है। अतः स्पष्ट होता है कि महाविद्यालय में प्रवेश के वांछित आधारों के बिना भी छात्र प्रवेश प्राप्त करने में सफल हो

जाते है। अतः महाविद्यालय प्रशासन के नियम कठोर होने के बाद भी इस तरह के प्रवेश प्राप्त करने में छात्र सफल हो जाते है।

प्र. क्रं. 4 ''आपको इस प्रकार की प्रवेश सुविधा उचित लगती हैं।'' 84 प्रतिशत छात्रों को वांछित के बिना प्रवेश सुविधा उचित नहीं लगती है। 16 प्रतिशत छात्रों को यह सुविधा उचित लगती है।

## आयाम –दो प्रवेश के उद्देश्य

प्र.क्रं. 1''आप अपना जीवन स्तर सुधारने के लिए प्रवेश लेते है।''

70 प्रतिशत विद्यार्थी अपना जीवन स्तर सुधारने हेतु प्रवेश लेते हैं, जबकि 30 प्रतिशत विद्यार्थी अपना जीवन स्तर सुधारने हेतु प्रवेश नहीं लेते हैं।

प्र. क्र.2 आप नवीन खोज करने के लिए उच्च शिक्षा लेते हैं। 44 प्रतिशत छात्र नवीन खोज के लिए उच्च शिक्षा लेते है, जबकि 55 प्रतिशत छात्र नवीन खोज के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं करते है।

प्र.क्र. 3 समकालीन उच्च शिक्षा रोजगार उपलब्ध कराने में उपलब्ध हैं।

महाविद्यालय के 69 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि समकालीन उच्च शिक्षा रोजगार उपलब्ध कराने में सहायक नहीं है, जबकि 31 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि समकालीन उच्च शिक्षा रोजगार उपलब्ध कराने में सहायक है।

प्र.क्र.4 ''महाविद्यालय में प्रवेश लेने में आपका उद्देश्य माता–पिता को संतुष्ट करना हैं। 06 प्रतिशत विद्यार्थी माता–पिता की संतुष्टि के लिए प्रवेश लेते है, जबकि 94 प्रतिशत विद्यार्थी माता–पिता की संतुष्टि के लिए प्रवेश नहीं लेते हैं।

### आयाम–3 शिक्षण शुल्क संबंधी

प्र.क्र. 1 महाविद्यालय में शिक्षण शुल्क प्रतिवर्ष बढ़ाया जाता है।

100 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि महाविद्यालय में शिक्षण शुल्क बढ़ाया जाता है।

प्र.क्र.2 महाविद्यालय में शिक्षण शुल्क प्रतिवर्ष बढ़ने से सहमत हैं।

100 प्रतिशत विद्यार्थियों प्रतिवर्ष शिक्षण शुल्क बढ़ने से सहमत नहीं हैं। अतः इससे स्पष्ट होता है कि प्रतिवर्ष के शुल्क के बढ़ने से छात्रों में तनाव व असंतोष होता हैं

प्र.क्र.3 ''महाविद्यालय में शिक्षण शुल्क एक बार में लिया जाता हैं।''

30 प्रतिशत विद्यार्थियों के अनुसार एक बार में शिक्षण शुल्क लिया जाता हैं, जबकि 70 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि शिक्षण शुल्क एक बार में नहीं लिया जाना चाहिए।

प्र.क्र 4 ''महाविद्यालय में शिक्षण शुल्क दो या तीन बार में लिया जाता है।''

70 प्रतिशत विद्यार्थियों के अनुसार दो या तीन बार में शिक्षण शुल्क लिया जाता हैं, जबकि 30 प्रतिशत विद्यार्थियों के अनुसार दो या तीन बार में शिक्षण शुल्क नहीं लिया जाता हैं। 27 प्रतिशत विद्यार्थियों को महाविद्यालयीन शिक्षण शुल्क में छूट दी जाती है, जबकि 73 प्रतिशत विद्यार्थियों में छूट नहीं दी जाती है।

प्र.क्र 6 ''महाविद्यालय में शिक्षण शुल्क में जाति के अनुसार छूट दी जाती हैं।''

42 प्रतिशत विद्यार्थियों को जाति के अनुसार शिक्षण शुल्क में दी जाती हैं, जबकि 58 प्रतिशत विद्यार्थियों को जाति के अनुसार छूट नहीं दी जाती हैं।

प्र.क्र. 7 ''महाविद्यालय में शिक्षण शुल्क में आर्थिक स्थिति के अनुसार छूट दी जाती हैं।''

30 प्रतिशत विद्यार्थियों को महाविद्यालय में आर्थिक स्थिति के अनुसार शिक्षण शुल्क में छूट दी जाती है। जबकि 70 प्रतिशत विद्यार्थियों को आर्थिक स्थिति के अनुसार छूट नहीं दी जाती हैं।

अतः स्पष्ट होता है कि महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को शिक्षण शुल्क से संबंधित छूट को लेकर भी तनाव तथा असंतोष उत्पन्न होता हैं।

**आयाम –4 पाठ्यक्रम संबंधी**

प्रश्न क्रमांक– 1''आप इस वर्ष के पाठ्यक्रम से संतुष्ट है।''

27 प्रतिशत विद्यार्थी इस वर्ष पाठ्यक्रम से संतुष्ट हैं, जबकि 27 प्रतिशत विद्यार्थी इस वर्ष के पाठ्यक्रम से कुछ छात्र संतुष्ट हैं, लेकिन पाठ्यक्रम में जो समय–समय पर परिवर्तन होता हैं, उससे संतुष्ट नहीं होते है।

प्रश्न क्रमांक 2 ''पाठ्यक्रम वर्षभर में पूरा हो जाता है

''

62 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है पाठ्यक्रम वर्ष भर में पूरा नहीं होता है। जबकि 38 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि पाठ्यक्रम वर्ष भर में पूरा हो जाता हैं।

प्रश्न क्रमांक –3 ''आप नियमित कक्षाएं न लगने से असंतोष अनुभव करते हैं।''

60 प्रतिशत विद्यार्थियों नियमित कक्षा न लगने से असंतोष अनुभव करते हैं। जबकि 40 प्रतिशत विद्यार्थी नियमित कक्षाएं न लगने से असंतोष अनुभव नहीं करते हैं।

प्रश्न क्रमांक –4 ''आपके महाविद्यालय में व्यावसायिक पाठ्यक्रम चलाये जा रहे है।''

62 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि महाविद्यालय में व्यावसायिक पाठ्यक्रम नहीं चलाये जा रहे हैं, जबकि 38 प्रतिशत विद्यार्थी का कहना है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

अतः इससे स्पष्ट है कि महाविद्यालय में व्यावसायिक पाठ्यक्रम न चलाये जाने से असंतोष का अनुभव करते हैं।

प्रश्न क्रमांक –5 महाविद्यालय की शिक्षा को व्यवसायोन्मुखी बनाना चाहिए।

100 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि महाविद्यालय में शिक्षा को व्यावसायोन्मुखी बनाना चाहिए। जिससे विद्यार्थियों में बेरोजगारी का भय दूर हो जायेगा।

**आयाम – 5 परीक्षा प्रणाली**

प्रश्न क्रमांक –1''महाविद्यालय की परीक्षा प्रणाली से संतुष्ट है।''

60 प्रतिशत विद्यार्थी परीक्षा प्रणाली से संतुष्ट नहीं हैं। जबकि 40 प्रतिशत विद्यार्थी परीक्षा प्रणाली से संतुष्ट है। अतः इससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी परीक्षा प्रणाली से संतुष्ट नहीं हैं

प्रश्न क्रमांक–2 ''महाविद्यालय की परीक्षा प्रणाली में सुधार व परिवर्तन होने चाहिए।''

64 प्रतिशत विद्यार्थी परीक्षा प्रणाली में सुधार व परिवर्तन के पक्ष में है। जबकि शेष 36 प्रतिशत विद्यार्थी परीक्षा प्रणाली एवं परिवर्तन के पक्ष में नहीं हैं।

अतः इससे स्पष्ट है कि अधिकतर विद्यार्थी परीक्षा प्रणाली में सुधार व परिवर्तन के पक्ष में हैं।

प्रश्न क्रमांक –3 क्या विद्यार्थी नकल करते समय पकड़े जाते है तो दण्ड दिया जाता हैं।''

100 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि महाविद्यालय में विद्यार्थी नकल करते समय यदि पकड़े जाते है तो उन्हें दण्ड दिया जाता है।

अतः इससे स्पष्ट है कि महाविद्यालय प्रशासन नकल करते समय पकड़े जाने वाले विद्यार्थियों को दण्ड देते हैं।

प्रश्न क्रमांक –4 ''आप नकल करने से सहमत हैं''

54 प्रतिशत विद्यार्थी परीक्षा कक्ष में नकल करने में सहमत नहीं हैं, जबकि 46 प्रतिशत इससे सहमत है।

प्रश्न क्रमांक –5 ''आप मानते है कि महाविद्यालय परीक्षा को नकल द्वारा पास किया जा सकता है।''

52 प्रतिशत छात्र परीक्षा को नकल के द्वारा पास किये जाने से सहमत नहीं हैं। जबकि 48 प्रतिशत विद्यार्थी परीक्षा को नकल के द्वारा पास करने से सहमत है।

प्रश्न क्रमांक –6 आपके महाविद्यालय में सेमेस्टर सिस्टम होना चाहिए

65 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि महाविद्यालय में सेमेस्टर सिस्टम नही होना चाहिए। जबकि 35 प्रतिशत विद्यार्थी सेमेस्टर सिस्टम से सहमत हैं।

**आयाम –6 शिक्षक और विद्यार्थी के संबंध**

प्रश्न क्रमांक –1''महाविद्यालय के शिक्षक पक्षपात पूर्ण व्यवहार करते हैं।''

61 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि महाविद्यालय में शिक्षक पक्षपात पूर्ण व्यवहार नहीं करते है, जबकि 39 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि शिक्षक पक्षपात पूर्ण व्यवहार करते हैं।

प्रश्न क्रमांक –2 ''आप महाविद्यालय के सभी शिक्षकों के व्यवहार से संतुष्ट रहते है।''

83 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि महाविद्यालय के विद्यार्थी शिक्षक के व्यवहार से संतुष्ट हैं। जबकि 17 प्रतिशत शिक्षक के व्यवहार से असंतुष्ट हैं।

निष्कर्ष– आज महाविद्यालयीन शिक्षा पर अनेक आरोप लगाये जा रहे है। इन आरोपों ने छात्र असंतोष जैसे आन्दोलन की स्थिति को उत्पन्न करके वस्तु स्थिति को और भी स्पष्ट कर दिया। महाविद्यालय के छात्रों में असंतोष इतना अधिक बढ़ गया है, कि वे हड़ताल घेराव, प्रदर्शन, मारपीट, हिंसा, पुतले दहन, परिक्षाओं का बहिष्कार, शिक्षकों का अपमान आदि करते हैं।

वर्तमान में छात्र असंतोष के विषय के लिए शैक्षणिक, सामाजिक तथा राजनीतिक स्तर पर समस्या का निदान खोजने का प्रयत्न किया जाना प्रारम्भ हो गया है, परन्तु अभी हम किसी ऐसे निश्चित परिणाम पर नहीं पहुँच पाये है, कि जिसे समस्या का निदान कहा जा सके। इसका एक बहुत बड़ा कारण भी है कि हम इस समस्या के तात्कालिक कारण ढूँढ कर उनका निदान करने की भूल कर रहे हैं।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


- श्रीमती दूबे सरला, (1967–74) सामाजिक विघटन तथा पुनर्गठन सरस्वती सदन 7 यू. ए.जवाहर नगर, दिल्ली–7
- मदन,जी. आर. (1969–1986) भारतीय सामाजिक समस्याएँ विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली–7


मदन,जी.आर. (1969–1986) भारतीय सामाजिक समस्याएँ विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली–7